रिकार्ड–हमें उन राहों पर चलना है.... ओमशांति प्रातःक्लास 15.12.67

ओमशांति। किन राहों पर चलना है?गुरू के राहों पर चलना है। यह कौन सा गुरू है?सदगुरू। उठते–बैठते मनुष्यों के मुख से निकल जाता है। वाह गुरू। गुरू की महिमा है ना। अब तो यह है सदगुरू। सिक्ख लोग भी कहते हैं सदगुरू अकालमूर्त है। जिसको फिर अकालतख्त भी कहते हैं। नाम तो बहुत रख दिये हैं। समझते नहीं हैं ;क्योंकि घोर अंधियारे में हैं। अंधियार से निकालने वाला है ज्ञान सूर्य। ज्ञान अंजन सदगुरू दिया.....तो कहेंगे वाह सदगुरू। गुरू तो अनेक हैं। वाह सदगुरू किसको कहेंगे?किसकी महिमा गावेंगे?सदगुरू एक ही बाप है। भक्तिमार्ग के तो ढेर गुरू हैं। कोई किसकी महिमा करते ,कोई किसकी महिमा करते हैं। बच्चों की बुद्धि में सच्चा सदगुरू एक ही है। जिसकी ही वाह–वाह मानी जाती है। सच्चा सदगुरू है तो जरूर झूठा भी होंगे। झूठ भी है, सच्च भी है। सच्च होता है संगम पर। भक्तिमार्ग में भी सच्च की महिमा गाते हैं। उंच ते उंच बाप ही सच्चा है ,जो ही लिबरेटर गाइड भी बनता है। आजकल के गुरू लोग तो गाइड बनते हैं गंगा स्नान पर वा तीर्थ आदि पर ले जाने। यह सदगुरू तो ऐसा नहीं है, जिसको सभी याद करते हैं हे पतित–पावन आओ। पतित–पावन सदगुरू को ही कहा जाता है। वह ही पावन बना सकते हैं। वह गुरू लोग पावन बना न सके। वह कोई ऐसे नहीं कहते हैं मामेकम् याद करो। भल गीता भी पढ़ते हैं ;परंतु अर्थ का बिल्कुल ही पता नहीं है। अगर समझते सदगुरू एक है तो अपन को गुरू नहीं कहलाते। ड्रामा अनुसार भक्तिमार्ग के डिपार्टमेंट ही अलग हैं। जिसमें अनेक गुरू,अनेक भक्त हैं। यह तो एक ही है। जो पहले नम्बर में वह लास्ट नम्बर में। जो लास्ट नम्बर में है उनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। तुम अभी पहले नम्बर में जाते हो बाकी सब खतम हो जानी है। यह देवी देवताएं पहले नम्बर में आते हैं ना। अभी लास्ट में हैं। बाप आकर इन्हों को सतयुग का बादशाही देते हैं। तो और सबको आटोमेटिकली वापस जाना पड़ता है। सर्व का सदगति दाता एक ही है। तुम समझते हो कल्प के संगमयुग पर ही देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम पुरुषोत्तम बनते हो। बाकी और कोई गुरू लोग कोई काम नहीं करते। जो भी मनुष्य गुरू हैं उन्हों को भक्ति मार्ग के लिए जो कुछ करना था (सो) किया। कोई भक्त गुरू मुक्ति–जीवनमुक्ति दे नहीं सकते। वह अपनी भी मुक्ति नहीं कर सकते। गाया भी जाता है मुक्ति–जीवनमुक्ति ,गति–सदगति दाता एक ही है। यह बाप की महिमा है। गति–सदगति संगम पर ही मिलती है। सतयुग में तो है ही एक धर्म। यह भी समझ की बातें हैं ना ;परंतु यह बुद्धि देवे कौन? तुम समझते हो बाप ही आकर युक्ति बताते हैं। श्रीमत देते हैं। किसको?आत्माओं को। वह बाप ही सदगुरू भी है,टीचर भी है। ज्ञान सिखलाते हैं ना। बाकी सभी गुरू भक्ति ही सिखलाते हैं। बाप के ज्ञान से तुम्हारी सदगति हो जाती है। फिर इस पुरानी दुनियां से ही चले जाते हैं। तुम्हारा यह बेहद का सन्यास भी है। बाप ने समझाया है अब 84जन्मों का चक्र तुम्हारा पूरा हुआ। अब यह दुनियां खतम होनी है। जैसे कोई बीमार सीरियस होता है तो कहेंगे अब यह तो जाने वाला है। उनको याद कर क्या करेंगे?शरीर तो खतम हो जावेगा। बाकी आत्मा जाकर दूसरा शरीर लेती है। उमेद(उम्मीद) टूट जाती है। बंगाल में तो जब देखते हैं उमेद(उम्मीद) न है तो गंगा पर जाकर डुबो देते हैं कि प्राण निकल जाये। पहले से ही ले जाते हैं। आत्मा तो निकल गई फिर मुर्दा तो कोई काम का न रहा। मूर्तियों की भी पूजा कर फिर कहते हैं डूब जा। अभी तुम जानते हो यह सारी पुरानी दुनियां डूब जानी है। डूब ही जावेंगे। फ्लड्स होंगी ,आग लगेगी। भूख में मनुष्य मरेंगे। यह सब हालतें आनी हैं। अर्थक्वेक आदि में भी मकान आदि गिर पड़ेंगे। इस समय ही प्रकृति को गुस्सा आता है। तो सबको खलास कर देते हैं। यह सब नौबतें सारी दुनियां के लिए आनी हैं। अनेक प्रकार के मौत आ जाता है। बम्ब्स में भी जहर भरा हुआ होता है। थोड़ी बास आने से बेहोश हो जाते हैं। यह तुम बच्चे जानते हो कि क्या2 होने का है। यह सब कौन कराते हैं। बाप तो नहीं कराते हैं। यह ड्रामा में नूंध है। कोई पर दोष नहीं देंगे। ड्रामा का प्लैन बना हुआ है। पुरानी दुनियां सो फिर नई जरूर होंगी। नैचुरल कैलेमिटीज जरूर होगी। विनाश होने

का है। इस पुरानी दुनियां से बुद्धि को हटा देना इसको ही बेहद का सन्यास कहा जाता है। अब तुम कहेंगे वाह सदगुरू जिसने हमको यह रास्ता बताया। बच्चों को भी समझाते हैं ऐसी चलन न हो जो उनकी निन्दा हो। तुम यहां जीते जी मरते हो। देह को छोड़ अपन को आत्मा समझते हो। देह से न्यारा आत्मा बन बाप को याद करना है। यह भी बाप ही सिखलाते हैं। ऐसे2 देह का भान तोड़ते जाओ। कहेंगे बाबा ने रास्ता बहुत अच्छा बताया है। वह सदगुरू वाह। पारलौकिक सदगुरू की ही वाह2 होती है। लौकिक गुरू तो ढेर हैं। सदगुरू तो एक ही निराकार है। हमारा सदगुरू एक ही वह है जो हमारा बाप भी है। गुरू को कब कोई बाबा नहीं कहेंगे। गुरू बाबा तो एक ही है। सच्चा2 जिसका फिर भक्तिमार्ग में भी नाम चला आता है। वह लोग नानक को भी गुरू बाबा कह देते हैं ;परंतु वह तो किसका भी गुरू बाबा हो नहीं सकता। सारी सृष्टि का बाप तो एक ही है। नई सृष्टि की स्थापना कैसे होती है यह भी किसको पता नहीं है। शास्त्रों में तो दिखाते हैं प्रलय हो गई। फिर पीपर के पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। अभी तुम समझते हो सागर में पीपर के पत्ते पर कृष्ण कैसे आवेगा?कृष्ण की महिमा करने से तो कुछ भी फायदा नहीं होता। अभी तुमको तो करना होता है वाह सदगुरू। बाकी हुए सब झूठे। उनसे तो तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते हो। भक्तिमार्ग में अनेक गुरू करते सीढ़ी उतरते आये हो। अब सदगुरू मिला है चढ़ती कला करने। कहते हैं चढ़ती कला तेरे बहाने सर्व का भला। तो रुहानी बाप बैठ आत्माओं को समझाते हैं। 84जन्म भी आत्मा ने ही लिये हैं ना। हरेक जन्म में नाम–रूप दूसरा हो जाता है। ऐसे नहीं कहेंगे फलाने ने 84जन्म लिये हैं। नहीं। आत्मा ने 84जन्म लिए हैं। शरीर तो बदलती जाती है। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातें हैं। सारी नालेज बुद्धि में रहनी चाहिए। कोई भी आवे तो उनको समझावें। आदि में था देवी–देवताओं का राज्य। फिर मध्य में रावण राज्य हुआ। सीढ़ी उतरते रहे। सतयुग में कहेंगे सतोप्रधान, फिर सतो,रजो,तमो में आते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम कैसे 84जन्म लेते आये हैं। कब से शुरू हुआ यह नहीं कहेंगे। बेअंत है। उनका अंत कब होता नहीं। चक्र फिरता ही रहता है। कोई2 कहते हैं बाबा को क्या पड़ी थी जो 84के चक्र में हमको लाया। अरे ,यह तो सृष्टि चक्र अनादि अविनाशी है। इनके आदि,मध्य,अंत को जानना है। मनुष्य होकर अगर नहीं जानते तो नास्तिक हैं। जानने से तुमको कितना उंच पद मिलता है। यह पढ़ाई कितनी उंची है। बड़ा इम्तहान पास करने वाले के दिल में खुशी होती है ना हम बड़े ते बड़ा दर्जा पावेंगे। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो यह ल.ना. राजयोग सीखकर मनुष्य से देवता बनें। इन देवताओं का अधिपति है। बाबा ने कल भी समझाया प्रभात फेरी में यह ल.ना. का चित्र भी होना चाहिए। इस पढ़ाई से यह राजधानी स्थापन हो रही है। पढ़ाई से कितना उंच पद मिलता है। वंडर है ना। इतने बड़े2 मंदिर जो बनाते हैं उन्हों से पूछो सतयुग आदि में इन्होंने जन्म केसे लिए बता न सकेंगे। तुम ही जानते हो यह तो गीता वाला ही राजयोग है। गीता पढ़ते आये हैं ;परंतु उनसे कुछ फायदा नहीं। अभी तुमको बाप बैठ सुनाते हैं। तुम कहते हो बाबा हम आपसे 5000वर्ष पहले भी मिले थे। क्यों मिले थे? स्वर्ग का वर्सा लेने। ल.ना. बनने लिए। कोई भी छोटे–बड़े बूढ़े आते हैं यह जरूर सीख कर आते हैं। एम ऑब्जेक्ट ही यह है। सत्यनारायण की यह सच्ची2 कथा है ना। यह भी तुम समझते हो राजाई बन रही है। जो अच्छी रीति समझ लेते हैं उनको आंतरिक खुशी रहती है। बाबा पूछेंगे हिम्मत है राजाई लेने की? कहते हैं बाबा क्यों नहीं? हम पढ़ते ही हैं नर से नारायण बनने। इतना समय हम अपन को देह समझ बैठे थे। अभी बाप ने हमको राइट्स रास्ता बताया है। देहीअभिमानी बनने में मेहनत लगती है। घड़ी2 अपने नाम–रूप में फंस मरते हैं। बाप कहते हैं इस नाम–रूप से न्यारा होता है। बाप ने यह फिर समझाया है तो यह समझ लेते हैं। बाप नाम–रूप से न्यारा है। अब आत्मा भी नाम तो है ना। बाप है सुप्रीम परमपिता। लौकिक बाप को कब परमपिता नहीं कहेंगे। परम अक्षर एक ही बाप को दिया हुआ है। वाह गुरू भी उनको कहते हैं। तुम सिक्ख लोगों को भी समझाय सकत हो। ग्रंथ में तो पूरा वर्णन है। और कोई शास्त्रों में

इतना वर्णन नहीं है। जितना ग्रंथ जप साहब, सुखमणि में हैं। अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं साहब को याद करो। तो तुमको 21जन्मों लिए सुख मिलेगा। इसमें मूंझने की कोई बात नहीं। बाप सहज करके समझाते हैं। कितने हिंदू ट्रांसफर हो जाकर सिक्ख बने हैं। ऐसे नहीं कि सिक्ख आय हिंदू बने हैं। नहीं। हिंदू जाकर सिक्ख बने हैं। ग्लानी भी हिंदू धर्म की ही हुई है। क्रिश्चियन हिंदू नहीं बनेंगे। लाचारी कोई .....फंस मरते हैं। (काबी)कभी हिंदू बनते नहीं हैं। हिंदू लोग उन्हों को क्या सिखलावेंगे?यह तो बाप को ही.....जानते। ऋषि–मुनि आदि सब कहते हैं हम नहीं जानते तो नास्तिक ठहरे ना। ऐसे2 टोटके निकाल तुम (समझाय) सकते हो। मनुष्यों को रास्ता बताने लिए कितना चित्र बनाते हैं। कितना सहज समझाते हो। तुम आत्मा हो फिर भिन्न धर्मों में आये हो। यह वैरायटी धर्मों का झाड़ है। और कोई को यह पता नहीं है कि क्राइस्ट कब आता है। बाप ने समझाया है नई आत्मा को कर्म नहीं भोगना पड़ता है। क्राइस्ट की आत्मा ने कोई विकर्म थोड़े ही किया है ,जो सजा मिली। वह तो सतोप्रधान आत्मा आती है। जिसमें जाकर प्रवेश किया उनको क्रास पर चढ़ाते हैं। क्राइस्ट को नहीं। वह तो जाकर दूसरा जन्म ले बड़ा पद पाते हैं। पापों का भी चित्र है। इस समय यह सारी दुनियां बर्थ नॉट अ पेनी है। तुम भी थे। अभी तुम बर्थ पाउंड बन रहे हो। भल कितने बड़े2 पदमपति हैं ;परंतु तुम जानते हो कि यह सब तो मिट्टी में मिल जानी है। ऐसे नहीं कि उन्हों के वारिस पिछाड़ी में खावेंगे। कुछ भी नहीं। तुम अपने हाथ भरपूर कर जाते हो। बाकी सब हाथ खाली जावेंगे। तुम भरपूर होने लिए पढ़ते हो। यह भी जानते हो जो कल्प पहले आये हैं वह ही आवेंगे। थोड़ा भी सुनेंगे तो आवेंगे। सब इकट्ठे तो देख भी न सके। तुम ढेर प्रजा बनाते हो। बाबा सबको थोड़े ही देख सकते हैं। थोड़ा–बहुत सुनने से भी प्रजा बनते जाते हैं। तुम गिनती भी नहीं कर सकेंगे। शास्त्रों में तो अग्रम–बग्रम लिख दिया है। सतयुग की आयु अगर इतनी बड़ी हो तो फिर अनगिनत हो जावे। वृद्धि होती रहती है ना। अभी कहते हैं 500करोड़ है। अगर कलियुग की आयु अजन 40हजार वर्ष हो तो कितने वृद्धि हो जावेंगे। यह सब बातें तुम समझते हो। तुम सर्विस पर हो। बाबा भी सर्विस पर हैं। बाबा सर्विस बिगर रह नहीं सकते। रोज सर्विस करने आते हैं। सतसंग आदि भी सुबह आदि को करते हैं। उस समय सबको फुरसत रहती है। बाबा तो कहते हैं तुम बच्चों को बिल्कुल सवेरे भी नहीं आना है और रात को भी न आना है ;क्योंकि दिन–प्रतिदिन दुनियां तो बहुत खराब होती जाती है। इसलिए गली2 में सेंटर ऐसा नजदीक होना चाहिए ,जो घर से निकले और सेंटर पर आये। सहज हो जाये। तुम्हारी जब बहुत वृद्धि होगी तब राजाई स्थापन होगी। बाप समझाते तो बहुत सहज हैं। हम यह राजयोग की स्थापना कर रहे हैं। बाकी यह सारी दुनियां होगी ही नहीं। प्रजा तो कितने ढेर बनती जाती है। माला भी बननी है। मुख्य तो बहुतों को सर्विस पर आप समान बनाते हैं। वह ही माला के दाने बनते हैं। वह लोग माला फेरते हैं ;परंतु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। बहुत गुरू लोग माला फेरने लिए देते हैं। ताकी बुद्धि....इसमें लगी रहे। काम महाशत्रु है। दिन–प्रतिदिन बहुत कड़ा होता जाता है। तमोप्रधान बनते जाते हैं ना । माताओं के लिए बहुत सहज भी है। बाबा ने समझाया है अगर जबरदस्ती बांधकर काला मुंह करते हैं तो पतित भी वह बनते हैं। तुम्हारे उपर दोष नहीं लगता। तुम्हार चाहना नहीं है तो। तुम्हारे पर पाप नहीं लगता। यह दुनियां ही बहुत गंदी है। बाबा को बहुत कहते हैं हम तो तुग(तंग) हो गए हैं। जल्दी सतयुग में चलें। बाप कहते हैं धैर्य धरो। स्थापना होनी ही है। यह खातरी करो। यह खातरी ही तुमको ले जावेंगे। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। अच्छा, मीठे रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते। ओमशांति।